4 संवाद-लेखन

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में परस्पर व्यवहार करने के लिए वह अधिकतर बातचीत का सहारा लेता है। यह बातचीत दो-तीन या अधिक व्यक्तियों के बीच हो सकती है। बातचीत को ही हम संवाद कहते हैं। यह संवाद (बातचीत) दो व्यक्तियों के बीच आमने-सामने भी हो सकता है और फोन के माध्यम से भी।

दो, तीन या अधिक व्यक्तियों के मध्य होने वाली परस्पर बातचीत को ज्यों-का-त्यों लिखना संवाद-लेखन कहलाता है। संवाद के अंतर्गत व्यक्तियों के नाम लिखकर उनके द्वारा बोली गई बात को (ज्यों-का-त्यों) उसी रूप में लिख दिया जाता है। एकांकी तथा नाटक संवाद विधा के उत्कृष्टतम उदाहरण हैं।

इस तरह संवाद-लेखन अपने आप में एक साहित्यिक विधा है। संवादों का प्रयोग (नाटक, एकांकी के अलावा) चलचित्र कहानी तथा उपन्यासों में भी किया जाता है। कथा साहित्य में जब कोई पात्र किसी अन्य पात्र से सीधे-सीधे बातचीत करता है तो लेखक वहाँ उन पात्रों के कथनों को संवादों के रूप में व्यक्त करता है। **किसी भी प्रसंग, घटना या कहानी के लिए संवाद लिखते समय निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखा जाना चाहिए।**

1. संवादों में भाषा प्रभावशाली, सरल, रोचक और चुटीली होनी चाहिए।
2. विचारों को तर्कसम्मत रूप से प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
3. संवादों की शब्दावली एवं भाषा देश, काल और व्यक्ति के अनुरूप होनी चाहिए।
4. संवाद में स्वाभाविक प्रवाह बना रहना चाहिए।
5. संवाद छोटे एवं रोचक होने चाहिए।
6. कहानी या घटना को आगे ले जाने वाले होने चाहिए।
7. मुहावरों एवं लोकोक्तियों का उचित प्रयोग होना चाहिए।
8. चरित्र को बखूबी प्रस्तुत करने वाले होने चाहिए।

H.W

① किसी प्राइवेट स्कूल में नौकरी हेतु साक्षात्कार (Interview) देने आए दो उम्मीदवारों के मध्य संवाद

② प्रदीप और गरिमा के बीच लड़का और लड़की में भेदभाव पर संवाद

③ दो अध्यापकों के बीच आपसी वार्तालाप (Activity)

Scanned with CamScanner